

रविवार 23 मार्च, 2025

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 2: 12

"परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।"

उत्तरदायी अध्ययन: नीतिवचन 16: 1-3, 9, 11, 16, 20-22

- 1 मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुंह से कहना यहोवा की ओर से होता है।
- 2 मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है, परन्तु यहोवा मन को तौलता है।
- 3 अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी।
- 9 मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।
- 11 सच्चा तराजू और पलड़े यहोवा की ओर से होते हैं।
- 16 बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या ही उत्तम है! और समझ की प्राप्ति चान्दी से अति योग्य है।
- 20 जो वचन पर मन लगाता, वह कल्याण पाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता, वह धन्य होता है।
- 21 जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझ वाला कहलाता है, और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।
- 22 जिसके बुद्धि है, उसके लिये वह जीवन का सोता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 119: 137, 140, 142 (तेरी व्यवस्था), 143 (तेरी), 144

- 137 हे यहोवा तू धर्मी है, और तेरे नियम सीधे हैं।
- 140 तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है, इसलिये तेरा दास उस में प्रीति रखता है।
- 142 ... तेरी व्यवस्था सत्य है।
- 143 ... मैं तेरी आज्ञाओं से सुखी हूं।
- 144 तेरी चित्तौनियां सदा धर्ममय हैं; तू मुझ को समझ दे कि मैं जीवित रहूं॥

2. मत्ती 15: 1-3, 10, 11, 13 (प्रत्येक), 15-28, 30, 31

- 1 तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे।
- 2 तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?
- 3 उस ने उन को उत्तर दिया, कि तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?
- 10 और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, सुनो; और समझो।
- 11 जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।
- 13 उस ने उत्तर दिया, हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा।
- 15 यह सुनकर, पतरस ने उस से कहा, यह दृष्टान्त हमें समझा दे।
- 16 उस ने कहा, क्या तुम भी अब तक ना समझ हो?
- 17 क्या नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह में जाता, वह पेट में पड़ता है, और सण्डास में निकल जाता है?
- 18 पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।
- 19 क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, पर स्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है।
- 20 यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं॥
- 21 यीशु वहां से निकलकर, सूर और सैदा के देशों की ओर चला गया।
- 22 और देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी; हे प्रभु दाऊद के सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है।
- 23 पर उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलों ने आकर उस से बिनती कर कहा; इसे विदा कर; क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है।
- 24 उस ने उत्तर दिया, कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया।
- 25 पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी; हे प्रभु, मेरी सहायता कर।
- 26 उस ने उत्तर दिया, कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।
- 27 उस ने कहा, सत्य है प्रभु; पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं।
- 28 इस पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो; और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई॥
- 30 और भीड़ पर भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों, और बहुत औरों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उस के पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया।
- 31 सो जब लोगों ने देखा, कि गूंगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की॥

3. रोमियो 8: 1-6

- 1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- 2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
- 3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
- 4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
- 5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
- 6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

4. 1 कुरिन्थियों 15: 45, 47-55, 58 (से 5th,)

- 45 ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।
- 46 परन्तु पहिले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ।
- 47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात् मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
- 48 जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय हैं।
- 49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥
- 50 हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोह परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
- 51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
- 52 और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।
- 53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
- 54 और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।
- 55 हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही?
- 56 सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है॥

5. नीतिवचन 5: 1

¹ हेमेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे, मेरी समझ की ओर कान लगा॥

6. दानिय्येल 7: 28 (से 1st.)

²⁸ इस बात का वर्णन मैं अब कर चुका॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468: 8-15

सवाल/ — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर/ — पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

2. 278: 1 (है)-19, 28-3

क्या आत्मा सामग्री का स्रोत या निर्माता है? विज्ञान आत्मा में कुछ भी ऐसा नहीं बताता जिससे सामग्री का निर्माण किया जा सके। दैवीय तत्वमीमांसा पदार्थ की व्याख्या करती है। आत्मा ही एकमात्र पदार्थ और चेतना है जिसे दिव्य विज्ञान द्वारा मान्यता प्राप्त है। भौतिक इंद्रियां इसका विरोध करती हैं, लेकिन कोई भौतिक इंद्रियां नहीं हैं, क्योंकि पदार्थ का कोई मन नहीं है। आत्मा में कोई पदार्थ नहीं है, जैसे सत्य में कोई त्रुटि नहीं है, और अच्छाई में कोई बुराई नहीं है। यह एक झूठा अनुमान है, यह धारणा कि वास्तविक पदार्थ है, आत्मा के विपरीत है। आत्मा, ईश्वर, अनंत है, सब कुछ है। आत्मा का कोई विपरीत नहीं हो सकता।

नश्वर की झूठी मान्यताओं में से एक यह है कि सामग्री पर्याप्त है या जीवन और संवेदना है, और केवल एक समरूप नश्वर चेतना में मौजूद है। इसलिए, जैसा कि हम आत्मा और सत्य से संपर्क करते हैं, हम पदार्थ की चेतना खो देते हैं। यह मानते हुए कि भौतिक पदार्थ हो सकता है, एक और प्रवेश की आवश्यकता है, - अर्थात्, आत्मा अनंत नहीं है और यह मामला आत्म-रचनात्मक, आत्म-अस्तित्व और शाश्वत है।

जिसे हम पाप, बीमारी और मृत्यु कहते हैं, वह नश्वर विश्वास है। हम सामग्री को त्रुटि के रूप में परिभाषित करते हैं, क्योंकि यह जीवन, पदार्थ और बुद्धि के विपरीत है। यदि आत्मा पर्याप्त और शाश्वत है, तो पदार्थ, उसकी मृत्यु दर के साथ, पर्याप्त नहीं हो सकता। हमारे लिए कौन सा पदार्थ होना चाहिए, — ग़लती से, बदलते हुए, परिवर्तनशील और नश्वर, या बेरोकटोक, अपरिवर्तनीय और अमर चीज़?

3. 425: 15-20 (से), 21-28

नश्वर मनुष्य कम नश्वर हो जाएगा, जब उसे पता चलेगा कि पदार्थ का कभी अस्तित्व नहीं रहा और वह ईश्वर को, जो मनुष्य का जीवन है, कभी नष्ट नहीं कर सकता। जब यह समझ में आ जाएगा, तो मानवजाति अधिक आध्यात्मिक हो जाएगी और जान जाएगी कि उपभोग करने के लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि आत्मा, ईश्वर ही सर्वव्यापी है।

मनुष्य के लिए ईश्वर उसके विश्वास से कहीं अधिक है, और जितना कम हम पदार्थ या उसके नियमों को स्वीकार करते हैं, उतना अधिक अमरता हमारे पास होती है। चेतना एक बेहतर शरीर का निर्माण करती है जब सामग्री में विश्वास की जीत हुई है। आध्यात्मिक समझ से भौतिक विश्वास को ठीक करें, और आत्मा आपको नए सिरे से बनाएगी। आप फिर से ईश्वर को नाराज करने के अलावा कभी नहीं डरेंगे, और आप कभी भी यह विश्वास नहीं करेंगे कि हृदय या शरीर का कोई भी हिस्सा आपको नष्ट कर सकता है।

4. 14: 1-18

यदि हम शरीर के साथ समझदार हैं और एक निगम, भौतिक व्यक्ति, जिसका कान हम प्राप्त करेंगे, के रूप में सर्वशक्तिमानता का सम्मान करते हैं, हम आत्मा के प्रदर्शन में "शरीर से अनुपस्थित" और "प्रभु के साथ उपस्थित" नहीं हैं। हम "दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते।" "प्रभु के साथ वर्तमान" होना, केवल भावनात्मक परमानंद या विश्वास नहीं है, बल्कि वास्तविक प्रदर्शन और जीवन की समझ है जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में सामने आया है। "प्रभु के साथ" होना ईश्वर के कानून का पालन करना है, परमात्मा द्वारा पूर्ण रूप से शासित होना, - आत्मा द्वारा, पदार्थ द्वारा नहीं।

एक क्षण के लिए सचेत हो जाएं कि जीवन और बुद्धि विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक है, - न तो भौतिक में और न ही भौतिक के साथ, - और शरीर तब कोई शिकायत नहीं करेगा। यदि बीमारी में विश्वास से पीड़ित हैं, तो अचानक आप खुद को स्वस्थ पाएंगे। शरीर को आध्यात्मिक जीवन, सत्य और प्रेम द्वारा नियंत्रित किए जाने पर दुःख को आनंद में बदल दिया जाता है।

5. 275: 10-24, 31-32

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सभी मन है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, - अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में मन की अभिव्यक्ति है।

सत्य, आध्यात्मिक रूप से समझे जाने पर, वैज्ञानिक रूप से समझा जाता है। यह गलती दूर करता है और बीमारों को चंगा करता है।

6. 127: 24 (सच)-29

... सत्य मानव नहीं है, और यह सामग्री का नियम नहीं है, क्योंकि सामग्री कानून का दाता नहीं है। विज्ञान दिव्य मन का एक प्रतीक है, और केवल भगवान की व्याख्या करने में सक्षम है। इसकी एक आध्यात्मिक उत्पत्ति है और एक सामग्री नहीं है। यह एक दिव्य उच्चारण है, दिलासा देने वाला जो सभी सत्य का नेतृत्व करता है।

7. 192: 4-13, 19-23, 27-31

हम वैज्ञानिक हैं, केवल तभी जब हम उस पर अपनी निर्भरता छोड़ देते हैं जो असत्य है और सत्य को समझ लेते हैं। हम तब तक वैज्ञानिक नहीं हैं जब तक हम सब कुछ मसीह पर छोड़ नहीं देते। मानवीय विचार आध्यात्मिक नहीं हैं। वे कान की सुनवाई से, सिद्धांत के बजाय भौतिकता से, और अमर के बजाय नश्वर से आते हैं। आत्मा ईश्वर से अलग नहीं है। आत्मा ईश्वर है।

श्रद्धा शक्ति एक भौतिक विश्वास है, एक अंधा गर्भित बल है, इच्छा की संतान है और ज्ञान की नहीं, नश्वर मन की है और न ही अमर की।

विज्ञान में, आपके पास भगवान के विपरीत कोई शक्ति नहीं हो सकती है, और शारीरिक इंद्रियों को अपनी झूठी गवाही देनी चाहिए। अच्छे के लिए आपका प्रभाव आपके द्वारा सही पैमाने पर फेंके गए वजन पर निर्भर करता है।

हम ईश्वरीय तत्वमीमांसा की समझ में अपने गुरु के उदाहरण का अनुसरण करके सत्य और प्रेम के नक्शेकदम पर चलते हैं। ईसाई धर्म सच्ची चिकित्सा का आधार है। जो कुछ भी मानव विचार को निःस्वार्थ प्रेम के अनुरूप रखता है, वह सीधे दैवीय शक्ति प्राप्त करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6